



SMT. HIRBAIBEN IBRAHIMBHAI LOBI

Smt. Hirbaiben Ibrahimbhai Lobi, President of the Adivasi Mahila Sangh, also known as the Siddi Woman's Federation, is known for her works for the Siddi Samaj and women's empowerment, their education and upliftment. which has 550 Siddi members from 42 Mahila Vikas Mandals. She founded the Women's Development Foundation in 2004. She did not run in any elections but has emerged as a village leader as a result of her efforts to better the lives of her community, women, in particular.

2. Born on 1st January, 1953. Smt. Hirbaiben hails from Jambur village, Gir, Gujarat. She lost her parents at a young age and was raised by her grandmother. She received no basic education and did not attend school or college. She was married with Shri Ibrahimbhai Lobi at an early age. She earned her livelihood by cultivating with the help of her husband on a small piece of land given by her father. In the absence of modern tools, they tilled the ground by hand.

3. Smt. Hirbaiben is a member of the Siddi community which accounts for 98% of Jambur's population. Siddis are African tribals who were brought to India as slaves for the ruler of Junagadh around 400 years ago. The Siddis, one of Gujarat's most backward communities, have spent decades living in the shadows, neglected and ignorant. She was determined to make a difference in the lives of other women. She is spearheading a silent revolution in 18 Saurashtra villages. Her initiatives include a cooperative movement, family planning, and a small savings club for the Siddis. They are also selling the trademark Siddis vermicompost. The women's cooperative now also provides loans and raises awareness about health problems. She also assisted in the construction of a community school for the Siddis and thus transformed the lives of over 700 women and children.

4. Smt. Hirbaiben has received several honours and awards. In 2001, she was awarded the Samman Patra by Gujarat Agriculture University in Junagadh and again in 2007 and 2012; the Women's World Summit Foundation's 'Prize for Women's Creativity in Rural Living' in 2002 and the IMC Ladies' Wing awarded with the 'Jankidevi Bajaj Puraskar' for Outstanding Woman Rural Entrepreneur in 2006; Harmony Silver Award and the Reliance Industries' 'Real Heroes Award' in 2008. She also received numerous awards for her endeavors, including the Senior Citizen Award - CNN IBN, the Business Women Committee - Gujarat Chamber of Commerce and Industry, and the Amodini Award -Godfrey Phillips Bravery, among others. She donated her prize money to children's schooling and the empowerment of Siddi women.



श्रीमती हिरबाईबेन इब्राहिमभाई लॉबी

श्रीमती हिरबाईबेन इब्राहिमभाई लॉबी सिद्दी वुमन्स फेडरेशन के नाम से प्रसिद्ध आदिवासी महिला संघ की अध्यक्ष हैं, जिन्हें सिद्दी समाज और महिलाओं के सशक्तीकरण, उनकी शिक्षा और उत्थान के लिए किए गए कार्यों के लिए जाना जाता है। इस संघ में 42 महिला विकास मंडलों के 550 सिद्दी सदस्य हैं। उन्होंने वर्ष 2004 में महिला विकास फाउंडेशन की नींव रखी। उन्होंने कोई चुनाव नहीं लड़ा लेकिन समुदाय, खासतौर से महिलाओं के जीवन की बेहतरी के लिए किए गए अपने प्रयासों से वह गांव की नेता के रूप में सामने आईं।

2. 1 जनवरी, 1953 को जन्मीं, श्रीमती हिरबाईबेन जाम्बूर गांव, गिर, गुजरात से हैं। बचपन में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया था और उनका पालन-पोषण उनकी दादी ने किया। उन्होंने कोई बुनियादी शिक्षा हासिल नहीं की, न ही वह स्कूल और कॉलेज गईं। कम उम्र में ही उनका विवाह श्री इब्राहिम भाई लॉबी के साथ हो गया था। वह अपने पिताजी द्वारा दी गई जमीन पर अपने पति की सहायता से खेती करके अपनी आजीविका चला रही थीं। आधुनिक उपकरणों के अभाव में वे हाथों से ही खेत जोतते थे।

3. श्रीमती हिरबाईबेन सिद्दी समुदाय की सदस्य हैं जो जाम्बूर की आबादी का 98% है। सिद्दी अफ्रीकी जनजाति के लोग हैं जिन्हें लगभग 400 साल पहले जूनागढ़ के शासक की सेवा के लिए गुलाम बनाकर भारत लाया गया था। गुजरात के सबसे पिछड़े समुदायों में से एक सिद्दी समुदाय ने कई दशक गुमनामी, उपेक्षा और पिछड़ेपन में बिताए हैं। वह अन्य महिलाओं की जिन्दगी बेहतर बनाने के प्रति दृढ़संकल्प थीं। वह सौराष्ट्र के 18 गांवों में मूक क्रांति लाने वाली महिला हैं। उनके द्वारा शुरू की गई पहल में, सिद्दी समुदाय के लिए सहकारिता आंदोलन, परिवार नियोजन और एक छोटा बचत क्लब शामिल है। यह समुदाय ट्रेडमार्क सिद्दी वर्मीकम्पोस्ट भी बेचता है। महिला सहकारी समिति अब ऋण भी प्रदान करती है और स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में जागरूकता भी फैलाती है। इन्होंने सिद्दी समुदाय के लिए समुदाय सूल के निर्माण में भी सहयोग दिया है और इस प्रकार इन्होंने 700 से अधिक महिलाओं और बच्चों के जीवन को बेहतर बनाया है।

4. श्रीमती हिरबाईबेन को कई सम्मान और पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। उन्हें वर्ष 2001, 2007 और 2012 में जूनागढ़ के गुजरात कृषि विश्वविद्यालय ने सम्मानपत्र से पुरस्कृत किया; वर्ष 2002 में वुमन्स क्रिएटिविटी इन रुरल लिविंग के लिए 'वुमन्स वर्ल्ड समिट फाउंडेशन' पुरस्कार दिया गया और वर्ष 2006 में सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण महिला उद्यमी के लिए आईएमसी लेडिज विंग ने 'जानकी देवी बजाज पुरस्कार' प्रदान किया; वर्ष 2008 में हारमनी सिल्वर अवार्ड और रिलायंस इंडस्ट्रीज के 'रियल हीरोज अवार्ड' से सम्मानित किया गया। उनके प्रयासों के लिए और भी कई पुरस्कार दिए गए, जिनमें सीनियर सिटीजन अवार्ड-सीएनएन आईबीएन, द बिजनेस वुमन कमेटी-गुजरात चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, और अमोदिनी अवार्ड-गॉडफ्रे फिलिप्स ब्रेवरी अवार्ड शामिल हैं। उन्होंने अपनी पुरस्कार राशि बच्चों की शिक्षा और सिद्दी महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए दान कर दी।